खलाई पौधों से बात करती है।

Ursula Nafula
Jesse Pietersen
Tanvi Sirari
Hindi
Level 2

ये खलाई है। ये सात साल की है। इसकी भाषा लुबुकुसु में इसके नाम का मतलब है, “एक अच्छा इंसान”।

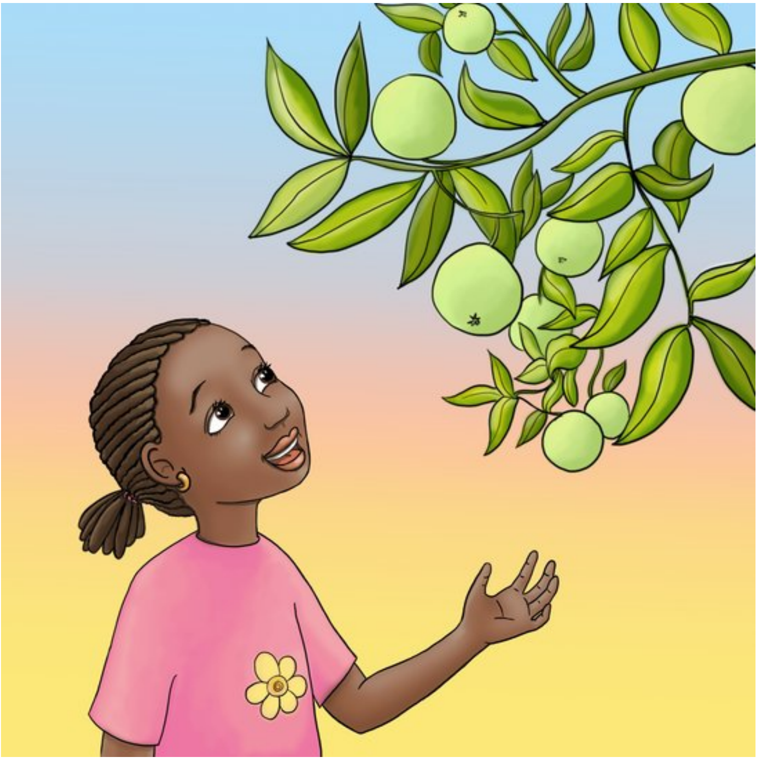

खलाई सुबह उठकर संतरे के पेड़ से बात करती है और कहती है कि “ओ संतरे के पेड़ खूब बढ़ो और बड़े होकर हमें बहुत सारे पके हुए संतरे दो।”

खलाई पैदल चलकर विद्यालय जाती है और रास्ते में घास से बात करते हुए प्यार से कहती है कि “घास, तुम और हरी-भरी हो जाओ और सूखना मत।”

खलाई जंगली फूलों के पास से गुजरती हुई उनसे कहती है कि “प्यारे-प्यारे फूलों, तुम हमेशा यूँ ही खिलते रहना ताकि मैं तुम्हें अपने बालों में लगा सकूँ।”

विद्यालय में, खलाई आँगन के बीच में लगे पेड़ से बात करती है और उससे अनुरोध करती है कि “ओ पेड़, कृपया अपनी शाखाएँ बड़ी करो ताकि हम तुम्हारी छाया तले बैठकर पढ़ सकें।”

खलाई अपने विद्यालय के चारों ओर लगी बाड़ से बात करती है और कहती है कि तुम बहुत ताकतवर बनो और बुरे लोगों को अंदर आने से रोको।

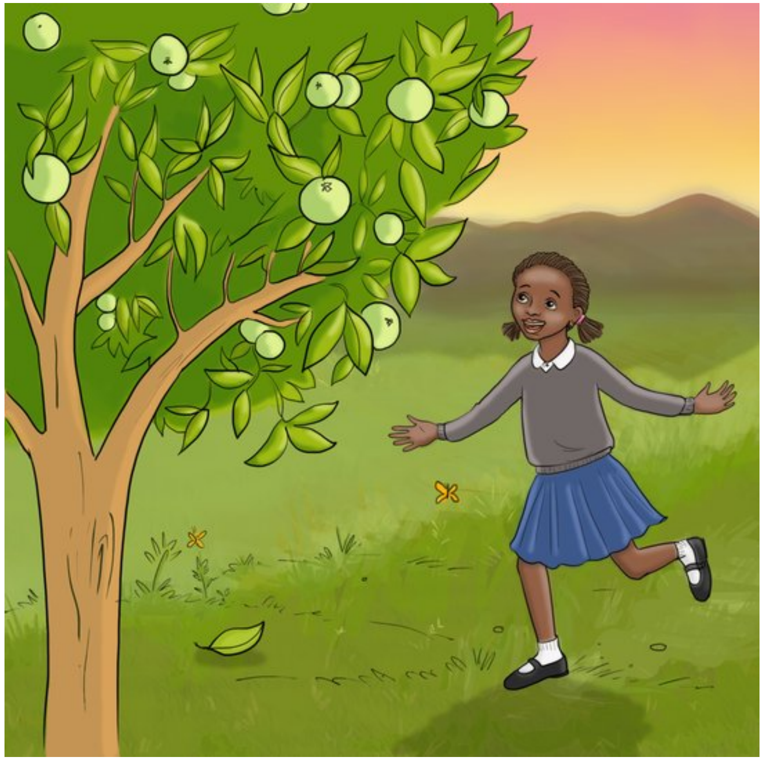

जब खलाई विद्यालय से वापस घर आयी, तब वो संतरे के पेड़ से मिली। “क्या तुम्हारे संतरे पक गए हैं?” खलाई ने पूछा।

“संतरे अभी भी हरे हैं,” खलाई ने आह भरते हुए कहा। “मैं तुमसे कल मिलूँगी संतरे के पेड़,” खलाई बोली। “शायद तब तुम्हारे पास मेरे लिए एक पका संतरा होगा!”

Storybooks Mauritius

global-asp.github.io/storybooks-mauritius

खलाई पौधों से बात करती है।

Written by: Ursula Nafula
Illustrated by: Jesse Pietersen
Translated by: Tanvi Sirari

This story originates from the African Storybook (africanstorybook.org) and is brought to you by Storybooks Mauritius in an effort to provide children's stories in Mauritius's many languages.

This work is licensed under a Creative Commons
Attribution 4.0 International License.